

आभिरत पर धमान लाने का मतलब क्या है?



संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

■ राहे अमल हिन्दी से लिप्यान्तरण किया हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

आभिरत पर धमान लाने का मतलब हे की आदमी एस हकीकत को कुबूल करे कि अेक अैसा दिन आने वाला है जूस मे धन्सानो की जुन्द्गी के पूरे रिकार्ड की जांय पडताल होगी, तो जूसके करम ठीक होंगे वह धनाम पायेगा, और जूसके करम ठीक नही होंगे वह सजा पायेगा. सजा कितनी होगी और धनाम कितना मिलेगा एसको बताया नही जा सकता.

[मुस्लिम; उमर बिन अत्ताब रही, रिवायत के अेक हिस्से का जुलासा]

/// आभिरत की भौङनाकी और उसके नजात का जरिया

हम लोग रसूलुल्लाह ﷺ की भेयैनी और झिऊ को ढेभकर और ज्यादा परेशान हुवे और पूछा कि जब आपका यह हाल है

तो हमारा क्या हाल होगा, बताये हम क्या
करें कि उस दिन कामयाब हों, रसूलुल्लाह ﷺ
ने उनको बताया कि अल्लाह पर भरोसा
रखो उसकी निगरानी में भिन्गी गुआरो,
उसकी भन्गी में जुने वाले कामयाब होंगे। [तिर्मिज़ी; अबू सईद खुदरी



रही, रिवायत का ખુલાसा]

◆ अभिरत का मन्जर

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- अगर कोई शम्स कयामत के
दिन को अपनी आंखों देखना चाहता है तो उसे चाहिये कि
ये तीन सुरते पढ़े, ९४श शम्सु कुव्विरत, ९४स समाउन
इतरत, और ९४स समाउन शककत, इन तीनों सुरतों में
कयामत का नकशा बहुत ही मोअस्सिर अन्दाज़ भीया है।

[तिर्मिज़ी ९४ने उमर रही, रिवायत का ખુલાसा]

◆ जमीन का ખुल्ला ખुल्ला अलान

रसूलुल्लाह ﷺ ने यह आयत पढ़ी "यौमर्जुन तुहदीसु
अખबारहा" (उस दिन जमीन अपने सारे हालात भयान
करेगी) और सहाबा रही से पूछा जानते हों हालात भयान

करने का मतलब क्या है? लोगों ने कहा
अल्लाह और उसके रसूल को ही धर्म है.
रसूलुल्लाह ﷺ ने इरमाया कि जमीन



क्यामत के दिन गवाही देगी कि इला मर्द या
इला औरत ने मेरी पीठ पर इला दिन और इला वक्त मे
बुरा या अच्छा काम किया, यही मतलब है धर्म आयत का,
लोगों के धर्म कामों को आयत में "अभजारा" कहा गया है.

[तिर्मिज; अबू हुसैन रही, रिवायत का भुलासा]

◆ अल्लाह के सामने पेश होने की हालत

रसूलुल्लाह ﷺ धनडाक यानी अल्लाह के धीन और अल्लाह
के बेसहारा बन्धों पर भर्य करना की तालीम दे रहे थे धर्म
लिये सिर्फ धर्म का जुकर किया इरमाते है कि अगर किसी
के पास सिर्फ अेक भजूर है और वह उस का आधा हिस्सा
देता है तो यह भी अल्लाह की निगाह मे कीमती है वह माल
की कमी ज्यादाती नहीं देभता बल्कि भर्य करने वाले के
जज्बा को देभता है. [भुजारी, मुस्लीम; अदि बिन हातिम रिवायत का भुलासा]

❖ क्यामत की सज्ती मे मोमिन से

नरम सुलूक



अबू सईद जुदरी रही कहते है कि मे
रसूलुल्लाह ﷺ की जिदमत मे हाजूर हुवा और
पूछा कि उस दिन जिस के बारे मे अल्लाह ने फरमाया है.
"याँमा यकूमत्रासू लिरबजिल आलमीन" (तू उस दिन को
सोय जब लोग हिसाब किताब" के लिये संसार के मालिक
के सामने पड़े होंगे) उस दिन तला कौन लोग पड़े रह सकेंगे
(जबकि वह अेक दिन हजार बरस के बराबर होगा)
रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया (उस दिन की सज्ती मुजरिमों
और बागियों के लिये है, उन्हे वह अेक हजार बरस का
मालूम होगा, मुसीबत मे पड़े हुये आदमी का दिन लम्बा
होता है, काटे नहीं कटता) वह दिन मोमिनो के लिये हल्का
होगा सिर्फ हल्का ही नहीं होगा बल्कि इर्ज नमाज की तरह
उसकी आंखो की ठंडक बन जायेगा. [मिशकात; अबू सईद जुदारी रही,

रिवायत का जुलासा]

◆ आसान हिसाब और उसके लिये



दुपा

जो लोग अल्लाह की राह पर चलते हैं और
बुराई की ताकतों से लड़ते रहे हैं, यहां तक कि
लड़ते लड़ते उनकी जुल्मी की मोहलत खत्म हो जाती है
तो क़्यामत के दिन अल्लाह उनकी ग़लतियों को माफ़ कर
देगा और नेक कामों की क़दर इस्माते हुए उन्हें जन्नत में
दाखिल करेगा। लेकिन जिस शख्स के छोटे छोटे कामों की
पड़ताल और पूछताछ शुरू हो गई तो वो अजब में ख़ूब
मुश्किल हो जायेगा। [मुसने अहमद, आयेशा रही, रिवायत का ज़ुलासा]

◆ मोमिन के लिये आप्रित के कीमती इनाम

रसूलुल्लाह ﷺ ने इस्माया अल्लाह इस्माता है मेने अपने
नेक बन्दों के लिये वो कुछ तय्यार कर रखा है जोसे किसी
आंख ने नहीं देखा है जोसके बारे में किसी कान ने नहीं सुना,
और ना कोई इन्सान कभी उसका ज़्यादा कर सका। तुम
याहो तो ये आयत पढ़ लो सुरे सजदह/१७ तरजुमा- फिर
जैसा कुछ आंखों की ठंडक का सामान उनके आमांल के

બદલે મે ઉનકે લિયે છુપા કર રખા ગયા હૈ
ઉસકી કિસી જાન કો ખબર નહી. [બુખારી,
મુસ્લીમ; રિવાયત કા ખુલાસા]



◆ આખિરત કે અજાબ ઓર સવાબ કી હકીકત

રસૂલુલ્લાહ ﷺ ને ફરમાયા દુનિયા કે સબસે જ્યાદા ખુશહાલ
દોજખી કો લાયા જાયેગા ઓર જહન્નમ મે ડાલ દિયા જાયેગા,
જબ આગ ઉસકે પૂરે જીસ્મ પર અપના અસર દિખયેગી તબ
ઉસસે પૂછા જાયેગા કિ કભી તૂને અચ્છી હાલત દેખી હૈ? તુજ
પર કભી "એશ વ આરામ કા જમાના આયા હૈ? વહ કહેગા
નહીં તેરી કસમ એ મેરે રબ કભી નહીં.

ફિર દુનિયા મે બહુત હી "તંગી" (ગરીબી) કી હાલત મે
જીન્દગી ગુજારને વાલે જન્નતી કો લાયા જાયેગા, જબ ઉસ પર
જન્નત કી નેમતોં કા ખૂબ રંગ ચઢ જાયેગા તબ ઉસ સે પૂછા
જાયેગા કિ તૂને કભી તંગી દેખી હૈ? કભી તુજ પર કઠિનાઈયોં
કા જમાના ગુજરા હૈ? વહ કહેગા એ મેરે રબા મે કભી તંગી
ઓર ગરીબી મે ગિરિફતાર નહીં હુવા, મે ને કઠિનાઈ કા કોઈ
જમાના કભી નહીં દેખા. [મુસ્લિમ; રિવાયત કા ખુલાસા]

◆ क्यामत के दिन रिश्तेदारी काम ना आयेगी



अबू हुरैरा रदी ने फ़रमाया जब सूरह शुअरा
की आयत पनजुर अशीरतकल अकरबीन
(अपने करीबी जानदान वालों को डराया) उतरी तो
रसूलुल्लाह ﷺ ने कुरैश को जमा किया और फ़रमाया,
ओ कुरैश की जमाअत अपने आप को जहन्नम की आग से
बचाने की फ़िक्र करो, मे अल्लाह के अजाब को तुमसे जरा
भी नहीं टाल सकता.

ओ अब्दे मुनाफ़ के जानदान वालो मे तुमसे अल्लाह के
आजाब को कुछ भी नहीं टाल सकता.

ओ अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (हकीकी यथा) मे
अल्लाह के अजाब को तुमसे जरा भी नहीं हटा सकता.

ओ सफ़िया (आप ﷺ) की हकीकी फूँड़ी, मे तुमसे अल्लाह के
अजाब को जरा भी नहीं हटा सकता.

ओ मेरी बेटी फ़ातिमा रदी, तू मेरे माल मे से ज़ुतना मांगे मे
दे सकता हूँ लेकिन अल्लाह के अजाब को तुज से नहीं हटा

સકતા.

તો અપને આપ કો બયાને કી ફિક્ક કરો કિ
ઈમાન ઓર અમલ હી વહા કામ આયેંગે.

[બુખારી મુસ્લીમ; અબૂ હુરૈરા રહી, રિવાયત કા ખુલાસા]



જત્રત ઓર જહત્રમ કે રાસ્તે

રસૂલુલ્લાહ ﷺ કી ઈસ હદીસ કા મતલબ યહ કિ જો શખ્સ
અપને નફ્સ (અસતિત્વ) કી પૂજા કરેગા ઓર દુનિયા કી
લજ્જતો મે પડેગા ઉસ કા ઠિકાના જહત્રમ હૈ, ઓર જીસ કો
જત્રત લેને કી તમન્ના હો તો વહ કાંટો ભરી રાહ અપનાયે
અપને નફ્સ કો હરા કર ઉસકો હર પરેશાની ઓર હર
નાગવારી કો અલ્લાહ કે લિયે બરદાશત કરને પર મજબૂર
કરે, જબ તક કોઈ શખ્સ ઈસ કઠિન ઘાટી કો પાર નહીં કરતા,
આરામ વ સુખ મે કૈસે પહુંચેગા. [બુખારી મુસ્લીમ; રિવાયત કા ખુલાસા]

જત્રત કી શાન

રસૂલુલ્લાહ ﷺ ને ફરમાયા જત્રત મે એક ફૂડા રખને કી જગહ
દુનિયા ઓર દુનિયા કે સામાન સે બેહતર હૈ. “ફૂડા રખને કો
જગહ” સે મુરાદ વહ થોડી સી જગહ હૈ જહા આદમી અપના

बिस्तर बिछा कर पडा रहता है. मतलब
 यह कि अल्लाह के दीन पर चलने में किसी
 की दुनिया तबाह हो जाये तमाम साज व
 सामान से मेहज़म हो जाये और उसके बदले
 जन्नत की मुफ़्तसर और थोड़ी सी ज़मीन मिल जाये तो यह
 बड़ा सस्ता सौदा है, ખત્મ होने वाली चीज़ की क़ुरबानी देने
 के नतीजे में अल्लाह ने उसे वह चीज़ दी जो हमेशा बाकी
 रहने वाली है. [बुखारी मुस्लीम; रिवायत का ખुलासा]



❖ जन्नत और जहन्नम से गाड़िल ना रहे

किसी ખतरनाक चीज़ को देखने के बाद आदमी की नींद उड
 जाती है वह उससे भागता है, और जब तक सुकून ना हो
 जाये सोता नहीं, ઈसी तरह જુસકો अच्छी चीज़ की ફिकर हो
 जाती है तो जब तक वह मिल ना जाये ना वह सोता है ना यैन
 से બੈઠता है. अगर यह हकीकत है तो जन्नत की तमन्ना करने
 वाले क्यूँ सो रहे हैं? ये जहन्नम से भागने की ફिकर क्यूँ नहीं
 करते? જુસકો किसी चीज़ का डर होता है वो બેખબર नहीं
 सोता और જુસ के અન્દર अच्छી चीज़ की તડપ होती है वो

यैन से नही बेठता. [तिर्मिजु; रिवायत का भुलासा]



◆ दीन मे नई चीजे पैदा करने वाले

का अन्जाम

हदीस के अन्दर सब से बडी भुसभबरी भी है और बहुत बडा डर भी है, भुसभबरी ये कि रसूलुल्लाह ﷺ उन लोगों का इस्तेफ्फाल करेगे जून्होंने आपके लाये हुवे दीन को बगैर किसी कमी ज़्यादाती के कुबूल किया और उसपर अमल किया. और जो लोग जान बूझकर दीन मे नई चीजें, दीन के नाम पर दाखिल करेंगे जो दीन से टकराती है तो ऐसे लोग रसूलुल्लाह ﷺ तक पहुचने और होजे कौसर का पानी पीने से महज़म रह जायेंगे. [भुभारी मुस्लीम; सहल बिन साद रही,

रिवायत का भुलासा]

◆ रसूलुल्लाह ﷺ की सिफ़ारिश के मुस्ताहिक

रसूलुल्लाह ﷺ का यह इरमान अपने अलफ़ाज के हिसाब से बहुत ही मुफ्तसर है लेकिन अपने मतलब के हिसाब से बहुत बडा है मतलब यह कि जूस ने तौहीद को नहीं अपनाया जूस ने इस्लाम कुबूल न किया जो शिर्क की गंदगी

ही में पडा रहा उस को रसूलुल्लाह ﷺ की
 शफाअत हासिल न होगी इसी तरह जिस
 ने जुमान से तो कलमा कहा और दीन में
 दाखिल हुवा लेकिन दिल से उसको सच्चा न



माना, वह भी रसूलुल्लाह ﷺ की शफाअत से महजूम रहेगा।
 रसूलुल्लाह ﷺ सिर्फ़ उन लोगों के लिये शफाअत इरमायेंगे
 जो दिल से ईमान लाये हों जो तौहीद के हक होने पर यकीन
 रखते हों, जैसा कि दूसरी हदीस में मुस्तेकिनन बिहा कल्बुहू
 के शब्द आये हैं, फिर यह बात भी वजह है कि यकीन,
 अमल, पर उलमारता है, आदमी को अपने बय्ये के कुवे में
 गिरने की ज़बर मिलती है तो जैसे ही उसे उस ज़बर पर
 यकीन होता है उसी वक्त दुप्पी होकर उसकी जान बचाने के
 लिये दौड पडता है यही हाल दिली ईमान का है यह आदमी
 के अन्दर निजात की झिंक पैदा करता और आमाँल पर
 उलमारता है। [जुजारी; अबू हुरैरा रही, रिवायत का झुलासा]